Department of Philosophy
D. B. COLLEGE, JAYNAGAR, MADHUBANI (BIHAR)
(A Constituent unit of L. N. Mithila University K. Nagar, Darbhanga)
Paper III, Indian Logic (BA Part II Honours)

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 07, Oct.
November 7, 2020

BA Part II Honours

बौद्ध मत के अनुसार अनुमान

बौद्ध दार्शनिक मात्र दो ही प्रमाण को स्वीकार करते हैं— प्रत्यक्ष और अनुमान। बौद्ध मत के अनुसार प्रत्यक्ष की विषय-वस्तु स्वलक्षण है, जो सर्वथा निर्विशेष है। अनुमान की विषय-वस्तु संवृत्ति है, जो सामान्य है। इस प्रकार बौद्ध मतानुसार अनुमान की उपयोगिता परमार्थ या यथार्थ सत्ता के ज्ञान प्रति शून्य है। यह मात्र संवृत्ति या सत्ता के आभासिक रूप का ज्ञान दे सकने में ही सक्षम है।

बौद्ध आचार्य दिग्नाग के अनुसार अनुमान दो प्रकार के हैं— स्वार्थानुमान और परार्थानुमान। स्वार्थानुमान और परार्थानुमान परस्पर सर्वथा भिन्न है। धर्मकीर्ति के अनुसार स्वार्थानुमान और परार्थानुमान का भेद इतना प्रबल है, कि अनुमान की कोई भी ऐसी सामान्य परिभाषा संभव नहीं जिसमें स्वार्थानुमान और परार्थानुमान दोनों साथ-साथ समाहित हो सके।

धर्मकीर्ति के अनुसार स्वार्थानुमान एक आंतरिक प्रक्रिया है जो स्वयं ज्ञाता के अंतर्मन में स्वयं के बोध के लिए संपन्न होती है। दूसरी ओर परार्थानुमान शब्दबद्ध होता है, क्योंकि परार्थानुमान से प्राप्त ज्ञान द्वारा दूसरों को विषय का बोध कराया जाता है। इस बोध के लिए अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है जो अभिव्यक्ति शब्द के अभाव में संभव नहीं है। अतः परार्थानुमान शब्दमूलक है।

बौद्ध न्याय के आधार स्तंभ बौद्ध दर्शनिक **दिग्नाग** के अनुसार— **"ज्ञात अविनाभाव संबंध द्वारा नान्तरीयक अर्थ का दर्शन ही अनुमान है।"** यहाँ

By:- Dr. Kumar Sonu Shankar
Assistant Professor (Guest)
kumar999sonu@gmail.com
8210837290, 8271817619
Lacture No. 07, Oct.
November 7, 2020

नान्तरीयक का अर्थ:- **एक वस्तु का दूसरी वस्तु के अभाव में कभी भी ना हो पाना 'नान्तरीयक' कहलाता है।** जैसे सूर्य उदय होने पर भूमि पर प्रकाश हो जाता है, नहीं होने पर भूमि पर प्रकाश नहीं हो पाता। जिस व्यक्ति को दो वस्तुओं के नान्तरीयक अथवा अविनाभाव संबंध का ज्ञान हो जाता है, उसे ही नान्तरीयक संबंध के एक संबंधी का दर्शन होने पर दूसरी वस्तु का ज्ञान होता है। यथा, जो अग्नि और धूम्र के नान्तरीयक संबंध का ज्ञाता है उसे ही धूम्र दर्शन से अग्नि का बोध होता है।

नान्तरीयक के तीन लक्षण हैं। शब्दान्तर से 'नान्तरीयक' हेतुत्रिरुपता संपन्न है। ये तीन लक्षण निम्नलिखित हैं:—

(क) लिङ्ग का अनुमेय में होना (पक्ष में रहना)।

(ख) लिङ्ग का सपक्ष में निश्चित उपस्थिति अथवा सत्व।

(ग) लिङ्ग की विपक्ष में निश्चित अनुपस्थिति अथवा असत्व।

इस त्रिरूप लिंग के द्वारा साध्यरूप विषय अथवा अर्थ का ज्ञान होता है।

आचार्य धर्मकीर्ति ने प्रमाणवार्तिक में अनुमान का लक्षण करते हुए कहा है— "किसी संबंधी के धर्म से धर्मी के विषय में जो ज्ञान परोक्ष रूप से उत्पन्न होता है उसे अनुमान कहते हैं।" आचार्य मनोरथनन्दी ने इसकी व्याख्या करते हुए लिखा है कि अन्यवय—व्यतिरेक के लिङ्ग द्वारा उसके आश्रय में जो परोक्ष अर्थ की प्रतीति होती है उसे अनुमान कहा जाता है, जो त्रिरुपलिङ्ग के द्वारा उत्पन्न होता है। अनुमान द्वारा परोक्ष अर्थ की एकांतिक रूप में सिद्धि की जाती है